नईदुनिया

ईरान ने अमेरिका का किया बुरा हाल, अब ट्रंप की नजर जापान के मोगामी क्साल युद्धपोत पर

मोगामी की सबसे बड़ी पहचान इसका अनोखा और आधुनिक बाहरी ढांचा

वाशिंगटन

ईरान-अमेरिका के बीच चल रहे युद्ध अमेरिकी नौसेना काफी दबाव में है। इसी के चलते ट्रंप को साउथ चाइना सी से अपना युद्धपोत हटाना पड़ा था, लेकिन अमेरिकी नौसेना को फिर से ताकतवर बनाने के लिए राष्ट्रपति ट्रम्प कदम उठा रहे हैं। अमेरिका तीन विदेशी युद्धपोतों को शामिल करने की योजना पर गंभीरता से विचार कर रहा है। इसमें सबसे आगे नाम जापान के मोगामी क्लास का लिया जा रहा है। मोगामी क्लास एक मिनी युद्धपोत है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक ट्रम्प द्वारा जारी किए गए एक विशेष आदेश के तहत नौसेना इस अध्ययन को अंजाम दे रही है। इस योजना को फिनलैंड माडल का नाम दिया जा रहा है। इसके तहत शुरुआत में दो युद्धपोतों का निर्माण विदेशी शिपयार्डों में सीधे तौर पर किया जाएगा ताकि उन्हें जल्द से जल्द नौसेना में शामिल किया जा सके। इसके बाद आगे के जहाजों के निर्माण की कमान अमेरिकी शिपयार्डों को सौंप दी जाएगी ताकि देश का घरेलू जहाज निर्माण उद्योग भी दोबारा खड़ा हो सके।

मोगामी की सबसे बड़ी पहचान इसका अनोखा और आधुनिक बाहरी ढांचा है। इस 133 मीटर लंबे और करीब 3900 टन वजनी जहाज को इस तरह से तराशा गया है। इसमें सीधी या खड़ी सतहें बहुत कम हैं। इस खास डिजाइन का मकसद दुश्मन के रडार को भ्रमित करना और अपनी मौजूदगी को लगभग छिपाए रखना है। इससे दुश्मन के लिए इस पर सही टारगेट पर हमला करना बेहद मुश्किल हो जाता है।

आमतौर पर इतने बड़े युद्धपोतों को चलाने के लिए सैकड़ों नौसैनिकों की जरूरत होती है, लेकिन मोगामी को महज 90 लोगों का क्रू आसानी से चला सकता है। पानी के नीचे छिपे खतरों को ढूंढ निकालने में मोगामी का कोई मुकाबला नहीं है। इसके पास एडवांस सोनार तकनीक, टारपीडो और एंटी-सबमरीन हेलीकाप्टर मौजूद हैं, जो समुद्र के सन्नाटे में छिपी दुश्मन की पनडुब्बियों को खोजकर तबाह कर देते हैं। इतना ही नहीं, यह जहाज पानी में बिछाई गई खतरनाक बारूदी सुरंगों को खोजने के लिए खास उपकरणों का इस्तेमाल भी कर सकता है। दुश्मन पर कहर बरपाने के लिए मोगामी के आगे एक 127 मिमी की विशाल नौसैनिक गन लगी है, जो तटीय और समुद्री ठिकानों को ध्वस्त कर सकती है। दुश्मन के जहाजों को डुबोने के लिए इसमें 8 घातक टाइप-17 एंटी-शिप मिसाइलें तैनात हैं। वहीं, हवा से आने वाली दुश्मन की मिसाइलों को नष्ट करने के लिए सीरैम डिफेंस सिस्टम और 16 सेल वाला वर्टिकल लान्चिंग सिस्टम लगाया गया है। इस समय अमेरिकी नौसेना अपने युद्धपोतों की संख्या तेजी से बढ़ाना चाहती है, लेकिन उसके अपने घरेलू शिपयार्ड इतनी तेजी से काम नहीं कर पा रहे हैं। ऐसे में मोगामी फ्रिगेट का कम क्रू, आधुनिक डिजाइन, कम लागत और पहले से तैयार उत्पादन क्षमता अमेरिका के लिए एक मुफीद विकल्प बन चुका है।

न्यूज ब्रीफ

नेपाल ने पहली बार लास एंड डैमेज फंड से मांगी आपात वित्तीय सहायता

काठमांडू। देश में आई विनाशकारी बाढ़ के बाद नेपाल सरकार ने पहली बार जलवायु परिवर्तन से होने वाली हानि और क्षति (लास एंड डैमेज) फंड से आपातकालीन वित्तीय सहायता मांगी है। हालांकि, नेपाल को कितनी राशि मिलेगी और यह सहायता कब तक प्राप्त होगी, इसका अभी कोई निर्णय नहीं हुआ है। अधिकारियों के अनुसार, फंड की रैपिड रिस्पान्स सुविधा के तहत मांगी गई सहायता की राशि नेपाल द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले नुकसान के प्रमाण और विवरण तथा फंड की बोर्ड बैठक में लिए जाने वाले निर्णय के आधार पर निर्धारित होगा। 26 अगस्त को हिमताल फटने के बाद ल्हेन्दे खोला होते हुए भोटेकोशी-त्रिशूली नदी में आई अचानक बाढ़ ने बड़े पैमाने पर जनहानि के साथ-साथ बुनियादी ढांचे और अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान पहुंचाया। इसके बाद नेपाल ने तत्काल राहत और पुनर्स्थापना के लिए इस फंड से सहायता मांगी है। वित्तमंत्री डा. स्वर्णिम वाग्ले और कृषि, वन एवं पर्यावरण मंत्री गीता चौधरी ने संयुक्त रूप से फंड के सह-अध्यक्षों को पत्र भेजकर बाढ़ से हुए नुकसान से तत्काल निपटने के लिए आपातकालीन वित्तीय सहायता की आवश्यकता बताई है। हालांकि, अभी तक फंड की ओर से पत्र का कोई औपचारिक जवाब प्राप्त नहीं हुआ है। कृषि, वन एवं पर्यावरण मंत्रालय के तहत जलवायु परिवर्तन प्रबंधन महाशाखा की उपसचिव दीपा ओली ने कहा कि नेपाल ने किसी निश्चित राशि की मांग नहीं की है। उन्होंने कहा, हमने राशि तय करके नहीं मांगी है। हालांकि कार्बन उत्सर्जन में नेपाल का योगदान नगण्य है, फिर भी हमें इसका खामियाजा भुगतना पड़ा है। जलवायु परिवर्तन के कारण भोटेकोशी में आई हिमबाढ़ से हमें नुकसान हुआ है। हमें आपातकालीन सहायता की जरूरत है, इसी उद्देश्य से पत्राचार किया गया है।

नासा ने किया रोमन स्पेस टेलिस्कोप को अंतरिक्ष में रवाना

वाशिंगटन। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने अपनी नई अंतरिक्ष वेधशाला नैंसी ग्रेस रोमन स्पेस टेलिस्कोप को अंतरिक्ष में रवाना कर दिया है। यह रोमन टेलिस्कोप ब्रह्मांड के रहस्यों को समझने और अंतरिक्ष में मौजूद अनदेखी दुनिया की तलाश करेगा। करीब 4.3 अरब डालर की लागत से तैयार यह बस के आकार का टेलिस्कोप पृथ्वी से लगभग 16 लाख किलोमीटर दूर लैग्रेंज प्वाइंट-2 यानी एल-2 की ओर बढ़ रहा है। इसी क्षेत्र में जेम्स वेब स्पेस टेलिस्कोप भी ब्रह्मांड का अध्ययन कर रहा है। इसे स्पेसएक्स के फाल्कन हेवी राकेट से फ्लोरिडा स्थित कैनेडी स्पेस सेंटर से प्रक्षेपित किया गया। रोमन का उद्देश्य जेम्स वेब या हबल की तरह केवल चुनिंदा खगोलीय पिंडों की बेहद विस्तृत तस्वीरें लेना नहीं है। इसे ब्रह्मांड के बहुत बड़े हिस्से का तेजी से सर्वे करने के लिए तैयार किया गया है। इसका फील्ड आफ व्यू हबल स्पेस टेलिस्कोप से 100 गुना से भी अधिक बड़ा होगा। वैज्ञानिकों के अनुसार, जिस क्षेत्र के सर्वे में हबल को करीब एक सदी लग सकती है, रोमन उसी काम को लगभग एक महीने में पूरा कर सकता है।

हिरोशिमा और नागासाकी: परमाणु हमलों से दो बार बचा इकलौता व्यक्ति

टोक्यो। हर साल अगस्त के माह में जापान अपने दो शहरों हिरोशिमा और नागासाकी पर हुए विनाशकारी परमाणु हमलों को याद करता है। 6 और 9 अगस्त, 1945 को हुए हमलों ने जापान में भारी तबाही मचाई थी, लेकिन इसी विनाशलीला के बीच ऐसी अविश्वसनीय कहानी भी है जो मानवता के लचीलेपन और भाग्य पर यकीन दिलाती है। यह कहानी है सुतोमु यामागुची की, जो इतिहास के इन दोनों परमाणु बम हमलों में चमत्कारिक रूप से बच निकलने वाले दुनिया के इकलौते शख्स थे। यामागुची मित्सुबिशी हैवी इंडस्ट्री में एक इंजीनियर के तौर पर काम करते थे। 6 अगस्त, 1945 को वह अपने काम के सिलसिले में हिरोशिमा में थे और अपने गृह नगर नागासाकी लौटने की तैयारी कर रहे थे, जहाँ उनकी पत्नी और बेटा उनका इंतजार कर रहे थे। सुबह का वक्त था जब अमेरिकी बी-29 बाम्बर एनोला गे ने लिटिल बाय नामक परमाणु बम हिरोशिमा पर गिराया। यामागुची धमाके के केंद्र से लगभग तीन किलोमीटर की दूरी पर थे। प्रचंड धमाके से वह जमीन पर गिर पड़े, बुरी तरह जल गए और उनकी सुनने की क्षमता को भी नुकसान पहुँचा।

वाशिंगटन और ईरान के बीच सैन्य टकराव बढ़ा

होर्मुज में एक-दूसरे के तेल टैंकरों पर हमला

वाशिंगटन/तेहरान

होर्मुज जलडमरूमध्य का सारा इलाका इस समय राकेट, ड्रोन और मिसाइलों के निशाने पर है। अमेरिका और वाशिंगटन ने एक-दूसरे के तेल टैंकरों को निशाना बनाना शुरू कर दिया है। पश्चिम एशिया (मध्य पूर्व) में गहराते संकट के बीच ऐसा पहली बार हो रहा है जब वाशिंगटन और तेहरान की मिसाइलें सीधे तेल टैंकरों को उड़ा रही हैं। अमेरिकी सेंट्रल कमांड (सेंटकाम) के अनुसार, यह कार्रवाई ईरान की ओर से अमेरिकी नौसेना के दो जहाजों पर बैलिस्टिक मिसाइलें दागे जाने के कुछ घंटे बाद की गई। ईरान ने दो अमेरिकी नौसेना के जहाजों को निशाना बनाकर बैलिस्टिक मिसाइलें दागीं। अमेरिकी युद्धपोत इन मिसाइलों से बचने में सफल रहे। इस हमले में किसी अमेरिकी सैन्यकर्मी के घायल होने की सूचना नहीं है। अमेरिकी बलों ने ईरान के तीन कच्चे तेल के टैंकरों पर हमला किया।

यह कार्रवाई वाशिंगटन और तेहरान के बीच बढ़ते सैन्य टकराव में एक और बड़ी वृद्धि के तौर पर देखी जा रही है। क्षेत्र में पहले से ही वाणिज्यिक जहाजों की आवाजाही प्रभावित है। संघर्ष के कारण अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा बाजार में भी अस्थिरता बढ़ी है। तेल टैंकरों पर हमले से समुद्री परिवहन और ऊर्जा आपूर्ति की सुरक्षा को लेकर चिंता और बढ़ सकती है।

रिपोर्ट के अनुसार, ईरान के रिवोल्यूशनरी गार्ड के एक एयरक्राफ्ट कैरियर और गाइडेड-मिसाइल डिस्ट्रायर पर बैलिस्टिक मिसाइलें दागने के बाद अमेरिका ने फारस की खाड़ी और ओमान की खाड़ी में तीन ईरानी तेल टैंकर पर हमलाकर उन्हें पानी में मिला दिया। इस हमले में अमेरिका का कोई भी युद्धपोत क्षतिग्रस्त नहीं हुआ और ना ही कोई घायल हुआ। ईरान के रिवोल्यूशनरी गार्ड्स ने कहा कि ईरानी टैंकरों पर अमेरिकी हमलों के जवाब में उन्होंने कई जहाजों पर हमला किया, जिनमें कथित तौर पर अमेरिका से जुड़े जहाज भी शामिल हैं।

गार्ड्स ने एक बयान में कहा कि उनकी नौसेना ने होर्मुज जलडमरूमध्य के अनधिकृत रास्ते पर तीन तेल टैंकरों और अन्य इलाकों में बच्चों की हत्या करने वाले अमेरिका से जुड़े तीन जहाजों को निशाना बनाया। उन्होंने दूसरे जहाजों को चेतावनी दी कि वे बिना मंजूरी वाले रास्तों से गुजरने की कोशिश न करें। अमेरिका ने इस बारे में तुरंत कोई पुष्टि नहीं की। इससे पहले अमेरिकी सेंट्रल कमांड ने कहा कि फारस की खाड़ी में तीन ईरानी तेल टैंकरों को हमेशा के लिए बेकार कर दिया गया है। यह कार्रवाई तब की गई जब ईरान के गार्ड्स ने अमेरिका के एयरक्राफ्ट कैरियर और गाइडेड-मिसाइल डिस्ट्रायर पर बैलिस्टिक मिसाइलें दागीं।

ईरान ने चेतावनी दी है कि अगर अमेरिका शिपिंग पर हमले जारी रखता है, तो अमेरिकी जहाजों पर हमले और भी गंभीर होंगे। इस पर इजराइल के इंस्टीट्यूट फार नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज में ईरान मामलों के विशेषज्ञ डैनी सिट्रिनोविच ने एक्स पर कहा कि ईरान का बैलिस्टिक मिसाइल से अमेरिकी एयरक्राफ्ट कैरियर को निशाना बनाना यह दिखाता है कि तेहरान अब उन जोखिमों को उठाने के लिए ज्यादा तैयार हो रहा है जिनसे वह पहले बचना चाहता था। ईरानी संसद के राष्ट्रीय सुरक्षा आयोग के सदस्य और प्रवक्ता हसन घशघवी ने अमेरिकी युद्धपोतों पर हुए हमलों को अमेरिका के साथ अस्तित्व की लड़ाई का हिस्सा बताया है। उनका तर्क है कि वाशिंगटन की नौसैनिक नाकाबंदी कभी होनी ही नहीं चाहिए थी।

पाक के खैबर पख्तूनख्वा में 21 आतंकवादी मारे गए

इस्लामाबाद

पाकिस्तान के अशांत प्रांत खैबर पख्तूनख्वा में कम से कम 21 आतंकवादी मारे गए। सेना की मीडिया शाखा इंटर-सर्विसेज पब्लिक रिलेशंस (आईएसपीआर) ने एक बयान में यह जानकारी दी। आईएसपीआर के यह आतंकवादी 3 से 5 सितंबर के बीच हुई मुठभेड़ों में मारे गए।

द न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, आईएसपीआर के बयान में कहा गया, 31 अगस्त/1 सितंबर 2026 की रात उत्तरी वजीरिस्तान जिले में पाकिस्तान-अफगानिस्तान सीमा पर सुरक्षा बलों की कार्रवाई के बाद इलाके में छिपे 10 और आतंकवादियों को मार गिराया गया। इससे घुसपैठ करने की कोशिश कर रहे मारे गए आतंकवादियों की कुल संख्या 25 हो गई ।

रिपोर्ट के अनुसार, 3 से 5 सितंबर के बीच मारे गए 21 आतंकवादियों में वह चार आतंकी भी शामिल हैं जिन्हें कोहाट और डेरा इस्माइल खान जिलों में संयुक्त अभियानों के दौरान दो अलग-अलग मुठभेड़ों में ढेर कर दिया गया।

आईएसपीआर ने कहा, अफगान तालिबान सरकार सीमा का प्रभावी प्रबंधन सुनिश्चित करने और आतंकवाद-रोधी अंतरराष्ट्रीय दायित्वों को पूरा करने में लगातार विफल रही है। सुरक्षा बल देश की सीमाओं की रक्षा करने के संकल्प पर अडिग हैं।

सेंटर फार रिसर्च एंड सिक्योरिटी स्टडीज की रिपोर्ट के अनुसार, 2021 में अफगान तालिबान के सत्ता में आने के बाद से पाकिस्तान में खासकर खैबर पख्तूनख्वा (केपी) और बलोचिस्तान प्रांतों में आतंकवादी गतिविधियों में बढ़ोतरी देखी गई है। 2026 की दूसरी तिमाही में ये दो प्रांत हिंसा के मुख्य केंद्र बने रहे। इनमें केपी सबसे ज्यादा प्रभावित इलाका रहा।

रिपोर्ट में बताया गया है कि इस तिमाही में हिंसा से जुड़ी कुल मौतों में से लगभग 96 प्रतिशत मौतें केपी और बलोचिस्तान में हुईं। कुल मौतों में से 61 फीसद से ज्यादा (475) मौतें केपी में हुईं, जबकि बलोचिस्तान में 34 प्रतिशत (265) मौतें दर्ज की गईं। केपी में हिंसा की सबसे अधिक घटनाएं भी दर्ज की गईं। यहां 151 मामले सामने आए, जो देश भर की कुल घटनाओं का 57 फीसद है। इसके बाद बलोचिस्तान का नंबर रहा, जहां 94 घटनाएं (35फीसद) हुईं।

मान्यता: जापान की नर्क की घाटी में मिलते है उम्र बढाने वाले अंडे

टोक्यो। जापान की ओवाकुदानी घाटी एक अनोखी घाटी है, जहां जमीन से निकलती गर्म भाप, सल्फर की तीखी गंध और उबलते पानी के कुंड किसी डरावने दृश्य का एहसास कराते हैं। इस ज्वालामुखीय इलाके को अक्सर नर्क की घाटी कहा जाता है। यहां मिलने वाले प्रसिद्ध काले अंडे के बारे में स्थानीय मान्यता है कि इन्हें खाने से व्यक्ति की उम्र सात साल बढ़ जाती है। ओवाकुदानी जापान के कानागावा प्रांत के हाकोने क्षेत्र में स्थित एक सक्रिय ज्वालामुखीय घाटी है। यहां धरती के भीतर मौजूद गर्मी के कारण लगातार भाप और गर्म गैसें निकलती रहती हैं। इसी प्राकृतिक वातावरण में मुर्गी के सामान्य अंडों को गर्म पानी के कुंडों में पकाया जाता है। पानी में मौजूद सल्फर और अन्य खनिजों की रासायनिक प्रक्रिया के कारण अंडों का बाहरी छिलका काला हो जाता है। हालांकि अंदर से अंडा सामान्य रूप से सफेद और खाने योग्य ही रहता है। इन काले अंडों को लेकर जापान में एक लोकप्रिय लोकमान्यता है कि एक अंडा खाने से जीवन में सात वर्ष की वृद्धि होती है। यह वैज्ञानिक रूप से सिद्ध दावा नहीं, बल्कि स्थानीय परंपरा और पर्यटन से जुड़ी मान्यता है। फिर भी यह अनोखी कहानी दुनिया भर के पर्यटकों को ओवाकुदानी की ओर आकर्षित करती है।

ट्रंप की धमकी के बाद सुर्खियों में पिकैक्स माउंटेन, ईरान का रहस्यमय परमाणु ठिकाना

वाशिंगटन

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान के पिकैक्स माउंटेन पर हमला करने की सीधी धमकी दी है, जिससे तेहरान में हड़कंप मच गया है। ट्रंप के अनुसार, अमेरिकी सेना बहुत जल्द ईरान के इस महत्वपूर्ण ठिकाने पर हमला कर सकती है। हालांकि एक ओर ट्रंप ईरान के साथ इस संघर्ष को युद्ध मानने से इनकार कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर लगातार हमले की धमकियाँ दे रहे हैं। उनके इस बयान के बाद, ईरान पर अमेरिकी बंकर बस्टर्स बमों के इस्तेमाल का डर एक बार फिर गहरा गया है, जिससे क्षेत्र में अस्थिरता बढ़ने की आशंका है।

अब सवाल यह है कि आखिर यह पिकैक्स माउंटेन क्या है, जिसे ट्रंप ने उड़ाने की धमकी दी है यह जगह इतनी खास क्यों है और अमेरिका के लिए इसे निशाना बनाना इतना मुश्किल क्यों माना जा रहा है। दरअसल, डोनाल्ड ट्रंप ने 4 सितंबर को कहा कि अमेरिका ईरान के पिकैक्स माउंटेन पर बहुत जल्द हमला कर सकता है। यह वही जगह है, जिसे ईरान के परमाणु कार्यक्रम से जुड़ा माना जाता है और यह तेहरान से करीब 220 किलोमीटर दक्षिण में, नतांज परमाणु परिसर के पास स्थित एक पहाड़ी इलाका है। इसे ईरान का सबसे रहस्यमयी और मजबूत अंडरग्राउंड परमाणु ठिकाना भी माना जाता है, जो नतांज परमाणु परिसर से केवल करीब 2 किलोमीटर की दूरी पर है।

भले ही अमेरिकी हमलों में ईरान की नतांज यूरेनियम संवर्धन साइट को भारी नुकसान पहुंचा हो, मगर इसी के पास मौजूद पिकैक्स माउंटेन का बाल भी बांका नहीं हुआ है। पिकैक्स यानी कुदाल या चट्टान तोड़ने वाला औजार होता है, इसी वजह से इसे पिकैक्स माउंटेन कहा जाता है। इसकी ऊंचाई समुद्र तल से करीब 1600 मीटर है, लेकिन यह कोई सामान्य पहाड़ी नहीं है। इसके अंदर, जमीन के काफी नीचे सुरंगों का एक बड़ा परिसर बनाया गया है। मौजूद जानकारी और सैटेलाइट तस्वीरों के विश्लेषण से पता चला है कि यहाँ कई सुरंग परिसर हैं, जिनमें चार सुरंगों के मुहाने हैं। माना जाता है कि ये सुरंगें पहाड़ के अंदर बने एक बड़े भूमिगत परिसर तक जाती हैं। यह पूरा ढांचा जमीन से कम से कम 100 मीटर नीचे होने का अनुमान है, और इसी असाधारण गहराई की वजह से यह जगह अमेरिका के लिए एक बड़ी चुनौती बन गई है।

अमेरिका के शीर्ष अधिकारियों का हुआ पालीग्राफ टेस्ट, गोपनीय सैन्य जानकारी लीक होने का आरोप

वाशिंगटन

अमेरिका के अत्यंत गोपनीय सैन्य भंडार और रणनीति से जुड़ी संवेदनशील जानकारी मीडिया में लीक होने के बाद हड़कंप मच गया है। इस मामले में अमेरिकी सेना के कई शीर्ष अधिकारियों से पालीग्राफ (लाई डिटेक्टर) जांच कराई गई है। जानकारी के अनुसार, राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप इन सूचनाओं के लीक होने से बेहद नाराज थे। यह घटना ऐसे समय में सामने आई है जब अमेरिका और ईरान के बीच तनाव एक बार फिर चरम पर पहुंच रहा है।

तीन अलग-अलग अमेरिकी अधिकारियों के हवाले से बताया गया है कि इस मामले में कई लोगों की जांच हुई, जिनमें सेंट्रल कमांड (सेंटकाम) और अन्य सैन्य कमानों के अधिकारी शामिल थे। हालांकि, सूत्रों ने स्पष्ट किया कि कोई भी अधिकारी मीडिया को जानकारी लीक करने से जुड़े सवालों की जांच में असफल नहीं हुआ। सीमित संख्या में लोगों के पास ही संबंधित गोपनीय जानकारी की पहुंच होने के कारण किसी विदेशी खुफिया एजेंसी के लिए काम कर रहे उच्च सुरक्षा मंजूरी वाले व्यक्ति द्वारा लीक किए जाने की आशंका भी जताई गई है।

रक्षा विभाग ने इस मामले पर सीधे टिप्पणी करने से इनकार करते हुए कहा कि वह आंतरिक जांच या कर्मचारियों से जुड़े मामलों पर बात नहीं करता। हालांकि, विभाग ने स्पष्ट किया कि वह गोपनीय जानकारी के लीक होने को बेहद गंभीरता से लेता है।

यह जांच ईरान के साथ संभावित युद्ध के दौरान अमेरिका के अत्याधुनिक और सीमित संख्या वाले हथियारों के तेजी से उपयोग संबंधी खबरों के बाद शुरू हुई थी। इससे पहले, रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ ने जुलाई में ही संवेदनशील सरकारी जानकारी मीडिया में लीक करने वालों की पहचान और उनके खिलाफ कार्रवाई के लिए रक्षा विभाग और न्याय विभाग की एक संयुक्त कार्यबल गठित करने की घोषणा की थी। अमेरिकी अधिकारियों ने बताया कि शीर्ष गोपनीय जानकारी तक पहुंच रखने वाले अधिकारियों की पालीग्राफ जांच सामान्य सुरक्षा प्रक्रिया का हिस्सा है, लेकिन इस बार जांच का दायरा असामान्य रूप से व्यापक था।

संघीय कानून और रक्षा विभाग के नियम पालीग्राफ के इस्तेमाल पर कुछ सीमाएं और प्रक्रियात्मक सुरक्षा उपाय भी निर्धारित करते हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि सभी वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों की जांच नहीं की गई; संयुक्त चीफ आफ स्टाफ के अध्यक्ष जनरल डैन केन भी जांच के दायरे में नहीं थे। इससे पहले भी, रक्षा मंत्री हेगसेथ पेंटागन से जानकारी लीक होने की आशंका में पालीग्राफ जांच का सहारा लेने की धमकी दे चुके हैं।

पिछले वर्ष चीन से संबंधित एक गोपनीय पेंटागन ब्रीफिंग की जानकारी मीडिया में लीक होने के बाद उन्होंने तत्कालीन कार्यवाहक संयुक्त चीफ अध्यक्ष एडमिरल क्रिस्टोफर ग्रेडी से भी कथित तौर पर पूछताछ की थी, हालांकि ग्रेडी की पालीग्राफ जांच नहीं कराई गई थी।